



Accredited with NAAC **A** Grade  
12-B Status from UGC

# PARAMPARA



Biannual E- Newsletter, Vol. 2, July to December, 2025



## CENTRE FOR INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM

Established on 24th May, 2023



Accredited with NAAC A Grade  
12-B Status from UGC

# TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY



## Centre for Indian Knowledge System in 2025- Part II

From July to December 2025, the Centre for Indian Knowledge Systems (CIKS) actively advanced its mission through a rich array of academic and collaborative initiatives. The Centre successfully organized five national conclaves that brought together scholars, practitioners, and policymakers to explore diverse dimensions of India's intellectual heritage. In addition, CIKS hosted a series of round-table discussions that facilitated focused dialogue on emerging research areas and their contemporary relevance. To strengthen capacity building, the Centre conducted orientation programs for students and educators, along with comprehensive Faculty Development Programs (FDPs) aimed at integrating Indian Knowledge Systems into modern pedagogy. Collectively, these activities contributed to expanding awareness, fostering research, and nurturing a vibrant community of IKS practitioners across the country.

### Summary of the Events Organized from July-December 2025

	<b>Faculty Development Programme</b> 10/07/2025	01	02	<b>6th National Conclave</b> 25/07/2025	
	<b>Orientation Programme</b> 11/08/2025	03	04	<b>Orientation Programme</b> 12/08/2025	
	<b>7th National Conclave</b> 03/09/2025	05	06	<b>Manthan (Round the Table Discussion)</b> 06/10/2025	
	<b>8th National Conclave</b> 01/10/2025	07	08	<b>9th National Conclave</b> 31/10/2025	
	<b>10th National Conclave</b> 04/12/2025	09	 <p><b>A Nation's culture resides in the hearts and in the soul of its people.</b> Mahatma Gandhi</p>		





# Glimpses: 7th National Conclave on Holistic Approach to Agriculture Using Indigenous Knowledge and Modern Technology

03/09/2025



EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE



**Prof. H.C. Purohit:** is Dean, School of Management and Dean Students Welfare, Doon University, Dehradun. He has been awarded with the Best Business Academician of the Year (BBAY) Gold Medal (2022) by the Indian Commerce Association.



**Dr. Sher Singh Samant:** is Emeritus Scientist, UCOST – Manaskhand Science Centre, Almora, Uttarakhand, former Director, ICFRE - Himalayan Forest Research Institute, Shimla, Himachal Pradesh.



**Dr. Mahesh Lohar:** is an internationally recognized speaker and mentor in the fields of Cognitive Development, Mind and Consciousness, Organizational Transformation, Green Habitat, and Indian Knowledge Systems.



**Dr. Saraswati Nandan Ojha:** is working as Head of the Department of Botany at Uttarakhand Open University, Haldwani. He is the recipient of Young Scientist Award – 2012, awarded by Uttarakhand State Council for Science & Technology, Dehradun.

## वैदिक परंपरा में कामधेनु, ऋषि और धरतीपुत्र पवित्र त्रिमूर्ति की मानिंद



मीसम आधारित खेती को आधुनिक तकनीकों जैसे- कृत्रिम बुद्धिमत्ता-एआई, उपग्रह आधारित निगरानी, सेंसर आधारित सिंचाई प्रणाली और डेटा एनालिटिक्स के

**(उमर केसरी संवाददाता)** साथ एकीकृत कर किसानों को मुरादाबाद। तैय्यकर महावीर युनिवर्सिटी के भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्र- आईकेएस सेंटर की ओर से स्वदेशी ज्ञान और आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए कृषि का समग्र दृष्टिकोण पर खर्चुजाली जैवें राष्ट्रीय कामधेनु में भारतीय परंपरागत कृषि ज्ञान जैसे- कृषि परंपरा में वहीत कृषि सिद्धांत, प्रकृतिक खेती, पंचपण्य और उतपदकता, आर्थिक स्थायित्व, और पर्यावरणीय संरक्षण को सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। यूनीवर्सिटी-मानसखण्ड साइंस सेंटर के एग्रीकल्चर वैज्ञानिक एचमू एचएफआरआई, आन्ध्रप्रदेश के पूर्व निदेशक डॉ. शेर सिंह सामंत ने हिमालय की अद्भुत वैभव विविधता और उसमें कृषि को भूमिका पर विस्तृत चर्चा की।

## तैय्यकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद के भारतीय ज्ञान परम्परा का केंद्र वैदिक परंपरा में कामधेनु, ऋषि और धरती पुत्र पवित्र त्रिमूर्ति की मानिंद



वैदिक परंपरा में कामधेनु, ऋषि और धरतीपुत्र पवित्र त्रिमूर्ति की मानिंद... (The text continues with details about the conclave, the role of indigenous knowledge, and the integration of modern technology in agriculture, as seen in the main article.)



# Glimpses: 8th National Conclave on The Role of Festivals in Preserving Indian Cultural Heritage

01/10/2025



EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE



**Dr. Dharm P5 Bhowik:** He is a Professor of Management, Culture, and Community Psychology at the University of Hawaii at Manoa, Honolulu & Professor in the Faculty of Management and Spirituality at the International Institute of Vedic Studies, Rishi Vatika, India



**Sri Haripressed Verma:** is a leadership coach and facilitator. He is the founder and CEO of Zensi Leadership Pvt. Ltd. & the co-creator and facilitator of Ritambhara Ashram, and the founder of Yogashala.



**Srinivas Jammalemedake:** is the Director of IKS Research, Brihat Educational Trust. He has been traditionally trained in the Krishna Yajurveda. He has been awarded titles such as Tanka Ratnam, Vidwan Mani, and Shastra Kalanidhi by H.H. Kanchi Shankaracharya



**Dr. Tanya Frense:** She is an Assistant Manager at Brihat and Editor (Sangam Talks) and Researcher – Sanyu Foundation, Delhi. She is a well-known blogger too.

## भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संवर्धन में त्योहारों का महत्व अनमोल

संस्कृत (Sanskrit) और भारतीय (Indian) संस्कृति, जिनके अंतर्गत अनेक त्योहार शामिल हैं, वे न केवल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को संवर्धित करते हैं, बल्कि समाज को एकता और एकता के भाव से जोड़ते हैं।

भारतीय त्योहारों का महत्व अनमोल है। ये न केवल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को संवर्धित करते हैं, बल्कि समाज को एकता और एकता के भाव से जोड़ते हैं।

भारतीय त्योहारों का महत्व अनमोल है। ये न केवल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को संवर्धित करते हैं, बल्कि समाज को एकता और एकता के भाव से जोड़ते हैं।



“India is the One land that all men desire to see, and having seen once, by even a glimpse, would not give that glimpse for all the shows of all the rest of the globe combined.”

— Mark Twain



# Round the Table Discussion on **Bhartiya Gyan Parampara** with Special Reference to **Jainology**

06/10/2025



EMINENT SPEAKER OF THE EVENT



**Prof. Jai Kumar N. Upadhyay**, former Director of Bahubali Prakrit Vidyapeeth, Karnataka, highlighted the breadth of the Indian knowledge tradition and the scientific nature of Jain philosophy.



## प्राकृत भाषा में रिसर्च की असीम संभावनाएं: प्रो. जय

### तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं सेंटर फॉर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्वावधान में गोलमेज संवाद

बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, कर्नाटक के पूर्व निदेशक प्रो. जय कुमार एन. उपाध्याय बतौर मुख्य वक्ता बोले, प्राकृत भाषा में शोध की अपार संभावनाएं हैं। सबसे प्राचीनतम उपलब्ध सामग्री अर्धमागधी, प्राकृत- मध्य- इंडो आर्य भाषा में लिखे गए प्रामाणिक जैन आगमों में निहित है। इन प्रामाणिक ग्रंथों पर जैन मुनियों ने विभिन्न टीकाएं लिखी हैं। बाद में संस्कृत, महाराष्ट्री प्राकृत जैसी अन्य भाषाओं में भी रचनाएं लिखी गईं। इससे पूर्व प्रो. जय कुमार ने गोलमेज संवाद की शुरुआत



पंडित रवि शंकर के राम अहिर भैरवी के मंगलाचरण से की। प्रो. जय कुमार तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद की ओर से भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन धर्म का योगदान पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। यह कार्यक्रम टीएमयू के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवम सेंटर

फॉर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। अत में मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। संचालन भारतीय ज्ञान परंपरा- आईकैएस केंद्र की समन्वयक डॉ. अलका अग्रवाल ने किया। डॉ. उपाध्याय ने प्राकृत भाषा की पहचान, उसकी सभ्यता, संस्कृत से उसका संबंध, भद्रबाहु सहिता, आचार्य कुंदकुंद जैसे प्रमुख जैन ग्रंथों का उल्लेख करते हुए भारतीय परंपरा में उनकी भूमिका को भी विस्तार से समझाया। उन्होंने जैन शोधार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए प्राकृत भाषा में उपलब्ध जैन ग्रंथों का संकलन और इस दिशा में चल रहे प्रयासों की वर्तमान स्थिति पर गहनता से चर्चा की। टीएमयू के कुलपति प्रो. वीके जैन ने यूनिवर्सिटी में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में जैन दर्शन की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन ने टीएमयू के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के महत्व पर प्रकाश डाला।

## प्राकृत भाषा में रिसर्च की असीम संभावनाएं: प्रो. जय

■ तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं सेंटर फॉर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्वावधान में गोलमेज संवाद

प्रो. जय कुमार एन. उपाध्याय, पूर्व निदेशक, बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, कर्नाटक के पूर्व निदेशक प्रो. जय कुमार एन. उपाध्याय बतौर मुख्य वक्ता बोले, प्राकृत भाषा में शोध की अपार संभावनाएं हैं। सबसे प्राचीनतम उपलब्ध सामग्री अर्धमागधी, प्राकृत- मध्य- इंडो आर्य भाषा में लिखे गए प्रामाणिक जैन आगमों में निहित है। इन प्रामाणिक ग्रंथों पर जैन मुनियों ने विभिन्न टीकाएं लिखी हैं। बाद में संस्कृत, महाराष्ट्री प्राकृत जैसी अन्य भाषाओं में भी रचनाएं लिखी गईं। इससे पूर्व प्रो. जय कुमार ने गोलमेज संवाद की शुरुआत



पंडित रवि शंकर के राम अहिर भैरवी के मंगलाचरण से की। प्रो. जय कुमार तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद की ओर से भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन धर्म का योगदान पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। यह कार्यक्रम टीएमयू के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवम सेंटर फॉर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। अत में मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। संचालन भारतीय ज्ञान परंपरा- आईकैएस केंद्र की समन्वयक डॉ. अलका अग्रवाल ने किया। डॉ. उपाध्याय ने प्राकृत भाषा की पहचान, उसकी सभ्यता, संस्कृत से उसका संबंध, भद्रबाहु सहिता, आचार्य कुंदकुंद जैसे प्रमुख जैन ग्रंथों का उल्लेख करते हुए भारतीय परंपरा में उनकी भूमिका को भी विस्तार से समझाया। उन्होंने जैन शोधार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए प्राकृत भाषा में उपलब्ध जैन ग्रंथों का संकलन और इस दिशा में चल रहे प्रयासों की वर्तमान स्थिति पर गहनता से चर्चा की। टीएमयू के कुलपति प्रो. वीके जैन ने यूनिवर्सिटी में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में जैन दर्शन की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन ने टीएमयू के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के महत्व पर प्रकाश डाला।

अनुसंधान, अहमद अली उपाध्याय के निदेशकत्व में प्रकाशित करने हुए 'अहमद अली उपाध्याय के जैन दर्शन' का संकलन और इस दिशा में चल रहे प्रयासों की वर्तमान स्थिति पर गहनता से चर्चा की। टीएमयू के कुलपति प्रो. वीके जैन ने यूनिवर्सिटी में भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में जैन दर्शन की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन ने टीएमयू के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के महत्व पर प्रकाश डाला।



# Glimpses: 10th National Conclave on Philosophy of Education in Ancient India and its Relevance from Gurukul to Global Wisdom

04/12/2025



## साधना, अध्ययन और आत्मानुशासन का श्रेष्ठ समय ब्रह्ममुहूर्त

### टीएमयू में 10वीं राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लैव

मुद्रासाकार (चित्र)। जीएलएयू, युनिवर्सिटी, मथुरा के प्रो. चंद्रशेखर प्रो. टीएस चौहान ने कहा, ब्रह्ममुहूर्त, ज्ञान और आत्मिक विकास के लिए सबसे अच्छा समय है। सत्य और धर्म भारतीय विचारधारा के मूल स्तंभ हैं। पंचमहाभूत- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के संदर्भ में उन्होंने कहा, भारतीय शिक्षा मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध को रेखांकित करती है। ज्ञान प्राप्त करना सीमित नहीं, बल्कि देखने, समझने, सोचने और सीखने का प्रक्रिया है। वेदों में निहित सही और ज्ञान का अर्थ ज्ञान भी सफल रूप में प्रस्तुत है। ज्ञान का उद्देश्य आत्म-विकास, समाज-विकास और लोक-कल्याण है, न कि स्वार्थ। प्रो. चौहान ने जर्म और धर्म दोनों के ज्ञान को आवश्यक बताया। उन्होंने ब्रह्ममुहूर्त को ज्ञान-अनुशासन, अध्ययन और साधना का बेहतरीन समय कहा। अस्त-पूर्वक का अर्थ है ज्ञान के माध्यम से प्रकृतिक ज्ञान। प्रो. चौहान तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुद्रासाकार के भारतीय ज्ञान परिषद-अध्यक्ष के रूप में और से निरंतरता के अर्थ में एकलक्षण इन एडिटरों के साथ एक बड़ा लिखित प्रश्न मुद्रासाकार के अध्यक्ष विवेक पर 10 वीं राष्ट्रीय ऑनलाइन कॉन्क्लैव में जारी मुद्रासाकार



बोल रहे थे। इससे पूर्व मां सम्पत्तियों की संरक्षण से सम्बन्धित एक संवेदनशील हुआ। जो मैं सभी प्रतिभागियों को प्रेरण पर भी निरंतरता लिए हुए।

टीएमयू के कुलपति प्रो. चोक वैर ने ज्ञान, ज्ञान और मुद्रासाकार के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए भारतीय पारंपरिक शिक्षा और आधुनिक-पद्धत शिक्षा प्रणालियों को तुलना की। उन्होंने कहा, कि मुद्रासाकार परंपरा के मूल सिद्धांत- अनुशासन, मुद्रासाकार-विकास, अनुभवजन्य अधिगम और मुद्रासाकार-समय और ज्ञान-ज्ञान-ज्ञान में भी

अन्य प्रयोगिक है। प्रो. वैर ने प्रौद्योगिकी, समाजवाद, न्याय, अर्थशास्त्र, न्याय-अध्यापित शिक्षा एवं नैतिक ज्ञान प्रणाली के महत्व पर जोर देकर कहा कि भारतीय बौद्धिक विचार में सम्बन्ध है। आईएमटीडी के प्रिंसिपल एडिटर एम. लक्ष्मी इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष प्रो. विद्यालोक ने कहा, आधुनिक तकनीक ने शिक्षा, उद्योग, अध्यापन और ज्ञान-संसाधन को प्रकृति की मूल रूप से बदल दिया है। उन्होंने ज्ञान और लेखन को ज्ञान

को ज्ञान-विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का पक्ष बताया। उन्होंने भारतीय और वैश्व शिक्षा-प्रणालियों को तुलना करते हुए कहा, दोनों को आत्मरक्षक धारणाओं को समर्थन देना ज्ञान बनाने का एक तरीका है। भारतीय पद्धति ज्ञान, स्मरण, पुनरावलोकन, उच्चतर और व्यवहारिक शिक्षा पर आधारित रही है, जबकि पाश्चात्य प्रणाली गैर-रिक्त करने में संतुष्ट रहती है। प्रो. गौतम ने वेदों को केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि आत्म-विकास और धार्मिक गुरु देने वाले ज्ञान को कहा। प्रो. वैर ने कहा, अर्थशास्त्र और एमपीए, मुद्रासाकार, शिक्षा के प्रो. चौहान डॉ. प्रेम ज्ञान ने भारतीय शिक्षा-परिषद और ज्ञान-विकास प्रयोगिक पर नैतिक गुरु कहा, एडिटर-2020 तथा डॉ. वैश्विक विचारधारा का मूल उद्देश्य ज्ञान और सत्यता का संचरण है। डॉ. ज्ञान को, भारतीय पद्धति अत्यंत अतिरिक्त है, परंतु वेद सत्यता के लिए प्रतीक साधना के लिए इतिहासिक भी हो सकती है। उन्होंने कहा, शिक्षा का अर्थ है एक उत्कृष्ट मनुष्य का निर्माण है। मुद्रासाकार नहीं बल्कि ज्ञानसाकार किया जाते हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र पद्धति के मुद्रासाकार को वैश्विक रूप से मुद्रासाकार किया और ज्ञान-विकास को ज्ञान-विकास के लिए ज्ञान-विकास। संवेदनशीलता, उद्योग, अनुशासन, धर्म और धार्मिक-विकास संचरण की कुंजी है। संसाधन-टीएमयू अध्यक्ष प्रो. वैर की सम्पत्तियों में अत्यंत ज्ञान और ज्ञान-विकास को संयुक्त रूप से किया।

EMINENT SPEAKERS OF THE CONCLAVE



**Prof. D.S. Chauhan:** Pro-Chancellor, GLA University, Mathura, Former Vice Chancellor, UPTU, UTU, GLA, LPU and Jaypee University.



**Dr. Vinayshil Gautam:** Founder Director of IIM-Kozhikode and Leader of the consulting team at IIM-Shillong, President Emeritus of ISTD and Member Board, International Federation of Training and Development Organisations



**Dr. Prem Vrat:** Chairman, Board of Governors of IIT (ISM) Dhanbad, IIT Mandi and WIT, Dehradun, Pro-Chancellor, Professor of Eminence and Chief Mentor at The NCU, Gurugram, Haryana.



Milestones to be Covered in Next 6 Months, 01/01/2026 to 30/06/2026				
S.No.	Month	Proposed Activity	Theme	Participants
1a	January	National Conclave 11 (Online)	Ancient Indian Oral Hygiene Practices and Their Relevance in Modern Dentistry	Dentists and Dentists to be, across the Nation
1b	January	National Conclave 12 (Offline)	Purpose, Passion, and Professional Life: Lessons from Shrimad Bhagwat Gita.	Students and faculty members of TMU
2	February	National Conference in Collaboration with College of Law & Legal Studies	Building Democracy through Law and Information.	Students and faculty members of CLLS, TMU
3	March	Classical Dance Competition in collaboration with Faculty of Education	"नृत्य से भारत दर्शन"	Entries will be invited from all colleges of TMU
4	April	Poster Competition	My India, My Pride	Entries will be invited from all colleges of TMU
5	May	University Examination		
6	June	Pannel Discussion	"IKS and Innovation: Lessons from the Past for the Future"	Experts will be invited from across India

**कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।  
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥**

*(Bhagavad Gita: Chapter 2, Verse 51)*

*By thus engaging in devotional service to the Lord, great sages or devotees free themselves from the results of work in the material world (Karma Yoga). In this way, they become free from the cycle of birth and death and attain the state beyond all miseries*

**TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY  
CENTRE FOR INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM**

Delhi Road, Moradabad, Website: [www.tmu.ac.in](http://www.tmu.ac.in)